

*einladen zu (gen.):* सेमाय क्रीताय प्रोक्षमाणायानुब्रूहि Ait. Br. 1, 13, 28. अनुब्रुवतेवानुप्रपत्तव्यम् 2, 20. Çat. Br. 3, 8, 2, 26. 4, 3, 4, 23. 4, 2, 9. 5, 1, 2, 14. 5, 4, 24. अग्रे ऽनुब्रूहि P. 8, 2, 91, Sch. इन्द्राग्निभ्यां पुरोडाशस्यानुब्रूहि Kātj. Çr. 6, 7, 19. 8, 9. 14. 19, 3, 4. P. 2, 3, 61. — 3) halten für, anerkennen für: एकः शास्ता न द्वितीयो ऽस्ति शास्ता यो हृक्ष्यस्तमहमनुब्रवीमि MBh. 14, 746. fig. तथानुब्रुवते त्वं किं dafür halten sie ja dich HARIV. 15319. — 4) med. nachsprechen, auswendiglernen, lernen: अनुब्रुवाणो अध्येति न स्वप्न् RV. 5, 44, 13. अथ यदेवानुब्रवीत तेनर्षिभ्य ऋणं ज्ञायते Çat. Br. 1, 7, 2, 3. 4, 2, 4, 1.

— अथ (abwehrend) besprechen: येनेषुमेकतेजनां शतशल्यामपब्रवत् AV. 6, 37, 1.

— अथि s. u. अति.

— अथ s. अनुब्रव.

— आ sich unterhalten: एवमाब्रुवमाणौ तौ संप्राप्ता केशवात्तिकम् HARIV. 6300.

— प्रत्या Jmd (acc.) antworten: प्रत्याब्रवीदुर्जुनम् MBh. 4, 1198. प्रीत्याब्रवीद् ed. Bomb.

— उद् med. 1) viell. sich verabreden über (acc.): अद्नमुद्ब्रुवते TBr. 1, 7, 10, 6. — 2) viell. sich Etwas versagen, sich lossagen von (gen.): स यत्र संभरति तस्योद्ब्रवीत तस्य नाम्नीयाध्यावज्जीवम् Çat. Br. 5, 2, 2, 4.

— उप med. (nur ein Mal act.) 1) zu Jmd. (acc.) sprechen: यमो ऽहं वामुपब्रुवे MBh. 12, 7228. — 2) bittend ansprechen um (dat.), anrufen; zureden, bereden zu RV. 1, 77, 3. 179, 5. (ग्यावापृथिवी) उपं ब्रुवे नमसा यज्ञे अस्मिन् 183, 7. 2, 30, 11. अतर्पं न वाजं सन्वियन्तुं ब्रुवे 3, 2, 3. इन्द्रं वृत्राय हतं पुरुहूतमुपं ब्रुवे 3, 37, 5. 4, 51, 11. ता वामियातो ऽवसे पूर्वा उपं ब्रुवे सवा 5, 64, 3. 49, 2. स्वस्त्ये वायुमुपं ब्रवामहे 51, 12. 6, 61, 5. 8, 6, 27. 23, 21. 10, 91, 11. AV. 14, 2, 63. 20, 136, 7. 8. mit acc.: तस्मा त्वमनुपं ब्रुवे 5, 22, 11. act.: उपो हरिणो पतिं दत्तं पृच्छतमब्रवम् । नूनं शुधिं स्तुवता अष्टयस्य RV. 8, 24, 14. Çat. Br. 9, 3, 2, 11.

— निस् 1) (laut, deutlich, einzeln) aussprechen ÇĀṆKH. Br. 27, 1. Çat. Br. 4, 2, 2, 12. 10, 3, 5, 15. LĀṬJ. 7, 12, 7. 13, 3. नेद्विद्वान्निर्ब्रवाणि ÇĀṆKH. Br. 21, 1. क्रमेत सर्वाणि पदानि निर्ब्रुवन् RV. Prāt. 11, 32. — 2) erklären Nir. 2, 1. सर्वज्ञेयार्थवर्णनात्सर्वानुक्रमणीशब्दं निर्ब्रुवति विपश्चितः MÜLLER, SL. 216. Durga zu Nir. bei Muir, ST. II, 176. 184.

— परि besprechen: यं कामयेतामयाविनं जीवेदित्यग्रेते ब्राह्मणाय प्रोच्यापः परिब्रूयात् एतद्वै भेषजम् KĀTH. 27, 4.

— प्र act. med. ansagen, verkünden, anzeigen, mittheilen; rühmend aussprechen, preisen: अस्पेडु प्र ब्रूहि पृथ्याणि कर्माणि RV. 1, 61, 13. चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् 53, 4. 161, 9. यः प्राब्रवीत्प्रो तस्मा अब्रवीत 12. स्तोमम् 3, 54, 10. कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम 4, 23, 6. 42, 7. 5, 29, 13. ये प्र विब्रवीत ब्रवते 87, 2. आदिन्मे वृषभा प्र ब्रवन्ति verheissen 10, 27. 3. पुराणा वा वीर्याः प्र ब्रवा जने 39, 5. 52, 1. बलानीन्द्र प्रब्रुवाणो जनेषु 34, 2. 65, 6. प्र कव्यमशनेव ब्रुवाणः 9, 97, 7. अनुषं प्रब्रुवाणः 2, 42, 1. प्रैतानिं त्वकनिं ब्रूमः anzeigen, verrathen AV. 5, 22, 8. 1, 7, 5. 5, 17, 9. VS. 23, 58. 36, 24. तं मत्स्यः प्राब्रवीत् verrieth TS. 2, 6, 6, 1. Çat. Br. 1, 7, 4, 10.

2, 2, 2, 11. 3, 3, 2, 5. 14, 4, 2, 1. Ait. Br. 6, 35. तद्वाक्यं ब्रूते 1, 28. Gobh. 1, 4, 36. सप्तम् स्तोत्रियासु परिशिष्टासु नः प्रब्रूतात् zeige an, wenn noch sieben St. übrig sind, ÇĀṆKH. Çr. 17, 14, 4. नान्यं पृच्छेन्नान्यस्मै प्रब्रूयात् KĀṬJ. Çr. 12, 3, 17. 6, 25. कल्याणीं वाचम् ÇĀṆKH. GRHJ. 3, 7. KAUC. 107. चतुरो मासो ह्यप्येभ्यः प्रब्रूयात् lehren 139. इदं वाव तज्ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म प्रब्रूयात् KHĀND. UP. 3, 11, 5. 4, 10, 2. तन्मे प्रब्रूतम् 8, 8, 1. KĀTHOP. 1, 13. M. 8, 58. 10, 1. 2. MBh. 3, 10487. 4, 18. 316. 12, 1963. 13, 344. मरुत्तस्य कथां प्रब्रूहि मे erzählen 14, 64. तासामपत्यानि — भगवान्प्रब्रवीतु मे HARIV. 9177. R. 6, 82, 101. MĀRK. P. 73, 34. 101, 2. Bhāg. P. 3, 20, 9. प्रब्रूत सत्यम् saget die Wahrheit, sprecht aufrichtig VARĀH. BRH. S. 73, 6. जी वेति प्रब्रुवन् ausrufend Spr. 984. यथा मां प्रब्रवीषि wie du mich nennst Bhāg. P. 2, 5, 10. गुणैरुपेतं सर्वैस्तं भगवन्प्रब्रवीषि मे schildern als MBh. 3, 16678. erzählen, mit dopp. acc.: प्राब्रवीद्वामं वलिना युधि विक्रमम् BHĀṬJ. 6, 107. अतस्त्वं प्राब्रवीम्यहम् darum sage ich es dir MBh. 4, 838. R. Gobh. 1, 69, 1. 3, 40, 24. सीता रावणं प्राब्रवीद्वचः sprach zu R. die Worte BHĀṬJ. 8, 85.

— प्रतिप्र erwiedern Çat. Br. 3, 2, 2, 22.

— प्रति 1) Jmd (acc.) antworten, act. RV. 1, 161, 3. 4, 3, 8. 10, 93, 13.

स यदि वा पृच्छेत् तिस्र इति प्रति ब्रूतात् TBr. 3, 11, 2, 2. LĀṬJ. 9, 10, 9. KHĀND. UP. 4, 4, 4. KAUSH. UP. 1, 1. 2. 5. MBh. 3, 2737. 12, 1962. RAGH. 2, 42. KATHĀS. 11, 52. 13, 63. 43, 220. 50, 125. Vid. 297. Bhāg. P. 3, 2, 3. mit doppeltem acc.: किमहं तं प्रतिब्रूयाम् R. 5, 29, 12. — 2) med. antworten so v. a. (Angriffe u. s. w.) zurückgeben: त्वया प्रति ब्रुवे यज्ञा RV. 7, 31. 6. प्रति अस्तं ब्रुवीमहि 8, 21, 11. 81, 32. — 3) verweigern, abschlagen तथापि न प्रतिब्रूयो गुरुभिः प्रार्थितं कियत् Bhāg. P. 6, 7, 37.

— वि 1) sich aussprechen, sich äussern, aussagen, sprechen: विब्रुवन्तु यथा सत्यमेतत् MBh. 3, 2990. एवं विब्रुवाणम् HARIV. 5888. तानविब्रुवतः किंचित् MBh. 13, 281. साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद्विब्रुवन् M. 8, 75, 78. अविब्रुवन्ती किंचित्सा राजानम् Nichts zum Könige sprechend MBh. 1, 3449. sich über Etwas (acc.) aussprechen, über Etwas seine Meinung sagen: erläutern, auslegen: तद्वाक्यं विब्रूत MBh. 2, 2262. व्यब्रवीद्वयुना मर्त्येभ्यो ऽग्निर्विद्वान् RV. 1, 143, 5. TS. 2, 3, 2, 8. 7, 3, 2, 3. यानेव मा प्रश्नान्प्राप्ता स्तानेव मे विब्रूहि Çat. Br. 11, 4, 2, 9. ÇĀṆKH. Br. 27, 1. PĀṆĀV. Br. 15, 7, 5. MBh. 2, 2248. 2306. 7, 9226 (wo mit der ed. Bomb. येनाविब्रुवता प्रश्नम् zu lesen ist). प्रश्नान्काश्चिद्विब्रुवाणम् 1, 166. वेदान्विब्रुवन् 1245. न विब्रूवाणो धर्मम् M. 8, 390. — 2) falsch aussagen: अनुब्रुवन्विब्रुवन्वापि न रो भवति कित्त्विषी M. 8, 13. 194. — 3) widersprechen, sich nicht einverstanden erklären KATHĀS. 19, 46. med. sich streiten: तेषां वा गोपू तनये यदप्सु वि क्रन्दसी उर्वरासु ब्रूवते RV. 6, 23, 4.

— सम् sich unterreden, sich unterhalten: यद् याति मरुतः सं हं ब्रुवते ऽध्वना RV. 1, 37, 13. वृत्तच्छायापविष्टास्ते दृष्टान्योऽन्यं समब्रुवन् R. 4, 50, 4. sich bereden, übereinkommen: समन्येषु ब्रवावहे RV. 1, 30, 6. zu Jmd Etwas sprechen, mit dopp. acc.: परुषं त्वं समब्रुवम् MBh. 6, 5828.

ब्रेष्क m. Schlinge (zum Erwürgen): अप्सु ब्रेष्केण, अन्त्येन मृत्युना KĀTH. 23, 6. ब्रेष्को ऽसि निरुत्याः पाशः 37, 13. 14. — Vgl. वेष्क.